श्री राम चंद्र मिशन
केवल निजी वितरण के लिए

ECHOES
INDIA

मार्च २०१३ खंड ६, अंक २

गुरुदेव के बारे में रिपोर्ट

जनवरी २०१३

गुरुदेव गायत्री में रह रहे थे और नियमित दिनचर्या का पालन कर रहे थे। प्रतिदिन शाम का सत्संग हो रहा था, कभी-कभी गुरुदेव सत्संग कराते थे लेकिन ज़्यादातर वे किसी प्रशिक्षक को सत्संग कराने के लिए कहते थे।

४ जनवरी को गुरुदेव एक चलचित्र देख रहे थे जो रात में ११:३० बजे तक चला और वे तब भी सोने के इच्छुक नहीं थे। बाद में सबको अहसास हुआ कि वे अपनी पोती माधुरी के यूनाइटेड किंगडम पहुँचने की प्रतीक्षा कर रहे थे। गुरुदेव उससे बात करने के बाद रात को १२:३० बजे सोए।

गुरुदेव ने अपनी ईमेल फिर से पढ़ना शुरु कर दिया है। किसी-किसी दिन वे दो-दो घंटे उन पर कार्य करते हैं। उन्होंने बी.बी.सी. का तीन भाग का वृत-चित्र 'जंगल में ६० वर्ष' देखा और वास्तव में उसका आनन्द लिया। एक दिन दोपहर के भोजन के समय गुरुदेव स्त्री और पुरुष के बिना शादी किए साथ रहने और बच्चे होने तथा बाद में शादी के लिए वचनबद्ध न होने के बारे में बात कर रहे थे। उन्होंने इसे खरीदने से पहले फल खाने जैसा बताया। उन्होंने इसका उल्लेख करते हुए कहा कि कैसे भारत में भी यह प्रचलित होता जा रहा है।

बुधवार ९ जनवरी को गुरुदेव ने आश्रम जाकर ९ बजे का सत्संग और विवाह संपन्न कराने का विचार किया लेकिन उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं था इसलिए भाई कमलेश पटेल ने सत्संग कराया और शादियाँ भी संपन्न करायी।

गुरुदेव टी.वी. श्रृंखला' चाणक्य' देख रहे थे और उन्होंने कहा कि वे चाणक्य के बारे में ज्यादा नहीं जानते हैं लेकिन उसके ज्यादातर कृत्य बदले की भावना से प्रेरित लगते हैं फिर भी राजनीति में वह बहुत कुशल था। गुरुदेव ने कहा कि बदले की भावना रखना अच्छा नहीं है।

१४ जनवरी २०१३– पोंगल

गायत्री में गुरुदेव बहुत जल्दी तैयार हो गए थे और बाहर बैठे थे। उन्होंने मौसम में ठंडक और कुहासे को महसूस किया और टिप्पणी की कि यह वह समय है जब चेन्नई में सर्दी समाप्त होती है। गुरुदेव आश्रम पहुँचे और नए ऑडियो-वीडियो और आई.टी. सुविधा केन्द्र का आकस्मिक दौरा किया। उन्होंने एक वार्ता रिकार्ड की जिसे सत्संग के बाद ध्यान-कक्ष में चलाया गया।

गुरुदेव ने १ घंटा १० मिनट का लम्बा सत्संग कराया। यह पूर्णतया आत्मसात करने वाला सत्र था जिसके पश्चात् गुरुदेव के तेज़ को अनुभव किया जा सकता था। तत्पश्चात् गुरुदेव कॉटेज के मरम्मत कार्य का निरीक्षण करने गए। दोपहर के भोजन के बाद गुरुदेव गायत्री चले गए।

इस दिन' गायत्री' की पचासवी वर्षगांठ थी और शाम के समय' गायत्री' में गणेश कुमारेश का संगीत का कार्यक्रम था। गुरुदेव ने सभी गीतों का आनन्द लिया और बोले कि यह उनके लिए एक बहुत स्मरणीय आयोजन था। उन्होंने एक कुशल मेजबान की भूमिका निभाते हुए सभी अतिथियों को रात के भोजन के लिए आमंत्रित किया और उनके भोजन करने तक वहीं उपस्थित रहे।

गुरुदेव ने एक फिल्म देखी जिसकी अधिकांश शूटिंग इस्तानबुल में की गयी थी। इस दौरान यह महसूस किया जा सकता था कि गुरुदेव उस शहर पर कार्य कर रहे थे। अगले दिन इस्तानबुल से एक परिवार आया और गुरुदेव से तुर्की में मिशन की प्रगति के विषय में बातचीत करने लगा। वे अपने साथ कुछ चित्र लाए थे और गुरुदेव उन चित्रों को काफी रूचि के साथ देख रहे थे और साथ–साथ उन्हें पहले दिन देखी फिल्म में दिखाए गए दृश्यों के साथ जोड़ रहे थे।

त्रिचि जाने से कुछ दिन पहले गुरुदेव ने अनुरोध किया कि गायत्री में कोई भी आगन्तुक न आए जिससे कि वे यात्रा पर जाने से पहले आराम कर सकें। गुरुदेव को त्रिचि जाने की योजना स्थगित करनी पड़ी क्योंकि यूरोप से २०० अभ्यासियों का एक समूह मणपाक्कम में आयोजित एक सेमिनार में भाग लेने के लिए आ रहा था जिसका शीर्षक था 'गुरुदेव से मिलन'। गुरुदेव रविवार को सत्संग कराने के लिए आश्रम गए और सोमवार को दोबारा सेमिनार का उद्घाटन करने के लिए आश्रम आए। मंगलवार सुबह को उन्होंने हवाई जहाज से त्रिचि के लिए प्रस्थान किया।

त्रिचि में

जैसे ही गुरुदेव के आगमन की घोषणा की गयी त्रिचि में उत्साह का वातावरण बन गया। २१ से २५ जनवरी तक त्रिचि आश्रम में एक प्रशिक्षक सेमिनार निर्धारित की गई–। सुसंबद्ध आश्रम परिसर में भारत और विदेश से आए लगभग ८० प्रतिभागियों का स्वागत किया गया। गुरुदेव २२ तारीख को त्रिचि पहुँच गए और २३ तारीख को उन्होंने सत्संग करवाया। वे प्रशिक्षकों के कार्य और उन्हें कैसे सिटिंग्स देना चाहिए के विषय में बोले। २६ तारीख को सत्संग के पश्चात उन्होंने भाईचारा, मेल–मिलाप के साथ जीवन और ध्यान करने की तुरन्त आवश्यकता के विषय मे वार्ता दी।

२७ तारीख को गुरुदेव द्वारा करवाए गए सत्संग में लगभग १५०० अभ्यासी सम्मिलित हुए।

थंजावुर में एक विशेष दिन

थंजावुर केन्द्र के अभ्यासियों ने ३८.८७ एकड़ भूमि का अधिग्रहण किया जिसमें से १२.५७ एकड़ भूमि को मिशन के नाम से पंजीकृत कराया गया और शेष भूमि अभ्यासियों के आवास भूखंडो के लिए रखी गई। ध्यानकक्ष, गुरुदेव की कॉटेज, रसोई, एक छोटी डॉरमेटरी और शौचालयों के लिए के लिए अस्थायी ढाँचे का निर्माण किया गया। गुरुदेव इस केन्द्र में आने के लिए काफी समय से उत्सुक थे किन्तु उनकी यात्राओं पर लगाई गई रोक और उसके बाद उनकी बीमारी के कारण वे यहाँ नहीं आ सके थे।

गुरुदेव ३० जनवरी को सुबह ८ बजकर २० मिनट पर त्रिचि से यहाँ पहुँचे और वे काफी प्रसन्न दिख रहे थे। जिस क्षण उन्होंने थंजावुर आश्रम में कदम रखा तभी से वे अपने बचपन के किस्सों और अपने पूर्वज़ों के परिवार की घटनाओं को याद करने लगे। नाश्ते के पश्चात् गुरुदेव चलकर ध्यानकक्ष में गए और सत्संग करवाया जो कि लगभग ५० मिनट तक चला। भाई लिंगुसैमी (एक प्रख्यात फिल्म निर्देशक) तमिल भाषा में बोले और उन्होंने बताया कि किस प्रकार सहजमार्ग ने उन्हें अपने जीवन और फिल्म उद्योग की तनावपूर्ण प्रकृति में संतुलन स्थापित करने में सहायता की।

इसके बाद गुरुदेव तमिल भाषा में बोले। उन्होंने कहा कि उनकी बीमारी के दौरान हमें प्रतिदिन बाबूजी महाराज के संदेशों (व्हिस्पर्स फ्राम दि ब्राइटर वर्ल्ड) को प्राप्त करने

का आशीर्वाद मिला जिनसे प्रत्येक व्यक्ति जिसने उन्हें पढ़ा लाभान्वित हुआ।

मालिक ने ध्यानकक्ष तक पैदल जाने का निर्णय लेकर सभी को सुखद आश्चर्य में डाल दिया और फिर सत्संग के बाद वार्ताएं सुन कर पैदल चलकर कॉटेज लौटे । आराम ना करते हुए वे बाहर बैठे और एक डेढ़ घंटे तक आभ्यासियों से बातचीत की। पुराने दिनों की तरह, उन्होंने प्रश्नों के उत्तर दिए, एक लड़की द्वारा गाए गानों को सुना और कुछ आभ्यासियों द्वारा लाए गए उपहारों को स्वीकार किया। यह सत्र इतने अधिक समय तक चला कि आखिर में अभ्यासियों को उन्हें विश्राम करने के लिए अनुरोध करना पड़ा।

अपनी थंजावुर भेंट के दौरान मालिक ने जमीन के नक्शे देखे और ध्यान कक्ष के लिए सही स्थान का चुनाव किया। दोपहर के भोजन के बाद लगभग २:३० बजे त्रिचि जाने के पूर्व वे आश्रम की ज़मीन पर गए और कुछ स्वयं सेवकों से मुलाकात की। उनकी इस यात्रा के बाद अधिकतम आभ्यासियों ने वातावरण में हर्ष का अनुभव किया।

शनिवार, २ फ़रवरी २०१३

पूज्य लालाजी महाराज के जन्म उत्सव पर मालिक आश्रम आए और सत्संग करवाया। मुख्य प्रवेश द्वार से ध्यान कक्ष तक रास्ते में खड़े हुए सभी का अभिवादन किया और फिर सत्संग करवाया, जिसमें १००० से अधिक अभ्यासी उपस्थित थे। मालिक ने २ विवाह संपन्न कराए और फिर भाई पी.आर.कृष्णा ने अंग्रेजी में व्हिस्पर्स के नए सन्देश का वाचन

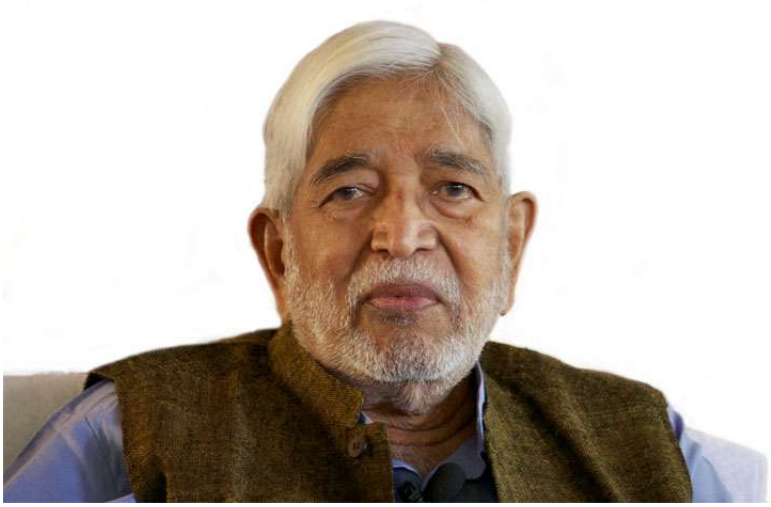

किया जिसे बाद में रूसी और फिर फ्रेन्च भाषा में पढ़ा गया। जिस भाषा में सन्देश प्राप्त होता है उस भाषा के बारे में मालिक ने कहा कि किसी भी व्यक्ति द्वारा सन्देश तब तक प्राप्त किए जा सकते है जब वह उस आवृत्ति (फ्रीक्वेंसी) के सामंजस्य में है और प्राप्त होने वाले सन्देश ह्रदय की भाषा में होंगे। इस सन्देश ने सभी मालिकों के जयंती दिवस के महत्व को और इसका अभ्यासियों पर पड़ने वाले प्रभाव को अधोरेखित किया।

मालिक ने 'रियालिटी एट डॉन' (सत्य का उदय) की पहली ऑडियो सीडी का अनावरण किया। इसके बाद मालिक 'जानकी फार्म' पर लौट गए।

कॉटेज पहुँचकर मालिक दिन के सत्संग के बारे में बातचीत करते रहे और बोले कि आज का सत्संग बहुत विशेष था। ऐसा कहते समय, सभी देख सकते थे कि मालिक का चेहरा चमक रहा था।

शाम को भाई कमलेश ने सभी विदेशी अभ्यासियों को, भाई शशांक द्वारा प्रस्तुत की जाने वाली बांसुरी वादन को सुनने एवं रात्रि भोजन के लिए जानकी फार्म पर आमंत्रित किया। लगभग १०० से अधिक अभ्यासियों का समूह वहां उपस्थित था। मालिक थके हुए थे इसलिए वे अपने शयनकक्ष में ही रहे और ९० मिनट तक चली मनोरम प्रस्तुती को सुना। कार्यक्रम के बाद मालिक संगीतकारों से मिले और कुछ समय तक उनसे बातचीत की।

३ फरवरी रविवार को मालिक ने एक छोटा सत्संग करवाया और चूंकि वे थोड़े थके हुए थे इसलिए उन्होंने कहा कि वे वार्ता नहीं दे पाएंगे । लेकिन जब उन्हें बताया गया कि मनपाक्कम से यूरोपियन अभ्यासी सिर्फ १ दिन के लिए आए हैं तो उन्होंने उन सभी को भोजन के लिए जानकी फार्म आने का निमंत्रण दिया जिससे कईयों की आखो में ऑसू आ गए। हमेशा की तरह मालिक इस बात का ध्यान रखे रहे थे कि वे अभ्यासी समय से अपनी यात्रा पर निकल सकें।

मालिक की तबियत थोड़ी खराब थी और शाम को कुछ चिकित्सा भी करानी पड़ी और फिर मालिक दर्द और पीड़ा के बारे में बातचीत करने लगे कि किस प्रकार सभी को इसे मुस्कराकर स्वीकार करना चाहिए। हर कोई देख सकता था कि वे दर्द में थे और जैसा वे कहते हैं वैसा वे मुस्कुरा रहे थे।

सप्ताहंत के बाद त्रिचि का आश्रम बिल्कुल खाली था। रूस से आए

लगभग ४० अभ्यासियों को मालिक ने कॉटेज बुलवाया, उन्हें सिटिंग दी और उनके साथ कुछ समय व्यतीत किया।

चीन और तुर्की से आए हुए कुछ अभ्यासी धूप में बैठे हुए मालिक के साथ बैठ गए। जब सूर्य की गर्मी अधिक महसूस हुई तो मालिक बरामदे में स्थित झूले में बैठ गए। वे कुछ थके हुए से दिखाई दे रहे थे क्योंकि वे काफ़ी समय से बैठे हुए थे और सिटिंग, वार्ताएँ आदि दे रहे थे। डॉक्टर उनसे आराम करने के लिए विनती कर रहे थे। फिर उन्होनें बाबूजी के बारे में वार्ता देना आरम्भ किया और कोई भी उनमें अकस्मात ऊर्जा प्रवाह देख सकता था। मालिक की वार्ता सुनते हुए उनके चारों और बैठे प्रत्येक के लिए यह एक महत्वपूर्ण समय था। मालिक द्वारा कही गई कुछ बातें यहाँ निरूपित की जा रही हैं। " ईश्वर हमें एक उपहार और कुछ कष्ट साथ–साथ देते हैं। यह हमारा कार्य है कि हमारे इन उपहारों का उपयोग कर इन कष्टों पर विजय प्राप्त करें।" "उन्नत मस्तिष्क का यह एक विशिष्ट लक्षण है कि यह आगे की नहीं सोचता है। वह वर्तमान क्षण में सही तरीके से कार्य करता है। यह मात्र शिक्षित, बुद्धिजीवी मस्तिष्क है जो अग्रिम सोचता है, योजना बनाता है, आदि।"

शाम ढलने तक मालिक बहुत थक गए थे तथा दर्द से पीड़ित थे और उन्हें कुछ उपचार लेना था। रात्रि भोज के पश्चात् यूरोप के कुछ अभ्यासी जो जा रहे थे, मालिक उनसे मिलने को सहमत हो गए। वे भीतर आए तो लगभग सभी की आँखों में आँसू थे। उनकी उपस्थिति मात्र से ही सब भाव–विभोर हो गए। एक बुज़ुर्ग महिला ने कहा कि उनकी पौत्री ने उन्हें शुभकामनाएँ दीं है तब मालिक ने उनकी पौत्री के लिए एक उपहार दिया। महिला की आँखों में आँसू झलक रहे थे और इस प्रकार अन्य की आँखों में भी आँसू थे। मालिक की ऐसी प्रेम, कृपापूर्ण और सौम्यतामय क्रियाओं को हमें अंगीकार करना चाहिए।

चूँकि उनका स्वास्थ्य पीड़ादायक था, मालिक ने एक दिन पूर्व ही चेन्नई लौटने का निर्णय किया। मालिक ने मंगलवार प्रातः ११ बजे सड़क मार्ग से त्रिचि प्रस्थान किया और वे रास्ते में विल्लूपुरम् में ठहरे।

विल्लूपुरम् केन्द्र के अभ्यासियों को मालिक की योजना से अवगत कराया गया और मालिक के स्वागतार्थ व्यवस्था की गई। मालिक मध्याह्न १२.३० बजे पहुँचे। उन्होनें ३० मिनट का दीर्घ सत्संग आयोजित किया और अभ्यासियों से परस्पर मेल–मिलाप किया और दोपहर का भोजन किया। उन्होंने आश्रम का नाम 'तपोनिधि' रखा। मालिक ने अपराह्न लगभग ३ बजे चेन्नई के लिए प्रस्थान किया। चेन्नई में, मालिक स्वास्थ्य की जाँच के लिए सीधे अस्पताल गए और फिर जल्दी ही विश्राम के लिए चले गए क्योंकि उनकी यात्रा काफी थकान भरी थी।

एक दोपहर, गायत्री में, मालिक यूरोप से आए कुछ युवा अभ्यासियों से बातचीत कर रहे थे जो लंबे समय से सहजमार्ग में है। उन्होंने प्रत्येक को एक सेब दिया और कहा कि एक बार बाबूजी ने उन्हें कुछ दिनों तक उपवास रखने को कहा और फिर एकसेब दिया था। मालिक चाकू ढूँढ रहे थे और बाबूजी ने पूछा कि उन्हें चाकू की आवश्यकता क्यों है। मालिक ने कहा कि वे इसमें से सब को बाँटना चाहते हैं। बाबूजी ने कहा, "मै जानता हूँ कि सबको कैसे दिया जाता है। मैंने इसे तुम्हारे लिए दिया है इसलिए तुम खा सकते हो।" इस प्रकार मालिक ने सभी को संदेश दिया कि उन्होंने जो सेब दिया है वह बाँटने के लिए नहीं बल्कि खाने के लिए दिया है।

रूस एवं दक्षिण अमरीका के अभ्यासियों के लिए सेमिनार

रूसी–भाषी अभ्यासियों के भारत आगमन का यह निरन्तर तीसरा वर्ष है। मनपाक्कम में ७५० अभ्यासी रूस से एवं १५० अभ्यासी दक्षिण अमरीका से एकत्रित हुए। सेमीनार के पहले दिन ९ फरवरी को मालिक कॉटेज के पुनर्निर्माण कार्य की जाँच करने गए तो धूल से संक्रमित हो गए। तब उन्होंने अभ्यासियों को ध्यानकक्ष से डॉर्म–ए में आने हेतु निवेदन किया जहाँ उन्होंने अल्पकालीन सत्संग आयोजित किया और फिर क्षमा याचना कर गायत्री के लिए प्रस्थान कर गए।

सेमीनार के लिए "प्रेम एवं समर्पण" विषय दिया गया था। विभिन्न गतिविधियों में सामूहिक भाग लेने के बावजूद व्यक्तिगत स्तर पर परिष्कृत कार्य स्वतंत्रतापूर्ण घटित होता दिखाई दिया। सम्पूर्ण आश्रम मालिक के प्रेम से आच्छादित हो गया। अभ्यासियों से मालिक के दृष्टिकोण का आत्मनिरीक्षण करने एवं उस दृष्टिकोण के अनुकूल अपना जीवन बनाने को कहा गया।

भाई कमलेश पटेल, ए.पी.दुरई, सी.राजगोपालन, पी.आर.कृष्णा, बिल वेकॉट, समीर सिंग और एन. एस. नागराज की प्रेरक और दिलचस्प वार्ताओं से प्रतिभागी लाभान्वित हुए।

वार्ताएं विभिन्न विषयों पर थी जैसे कि प्रेम और समर्पण, ईश्वरीय

सिद्धांत, सेवा ही जीवन है, सहज मार्ग का भावार्थ और मेरे जीवन में सहज मार्ग। वार्ताओं के दौरान जो भी सुना गया, उस पर चिन्तन करने के लिए और उसे आपस में बाँटने के लिए संचालकों ने हर दोपहर को सामूहिक सत्रों का संयोजन किया।

दो भिन्न प्रदेशों के सहभागी आपस में अति शीघ्र हिल-मिल गए और इसके फलस्वरूप कुछ संयुक्त परियोजनाएं बनीं। दोनों महाद्वीपों के युवाओं ने एक गीत रिकार्ड किया और उसे गुरुदेव को भेंट किया।

अंतिम दिन-१७ फरवरी को गुरुदेव ने सत्संग कराया और सभी सहभागियों को भोजन के लिए आमन्त्रित किया। यह उनकी ओर से एक बहुत ही विशेष उपहार था। एक लघु सांस्कृतिक कार्यक्रम गुरुदेव के सामने प्रस्तुत किया गया। यह एक रूसी लोकनृत्य था तथा कई भाषाओं के गीतों का मिश्रण था। गुरुदेव ने फ़िर एक बार अपनी बुद्धिमत्ता को सबके साथ बाँटते हुए बताया कि यह ब्रह्माण्ड कभी समाप्त न होने वाला आरम्भ है। उन्होंने हाल ही के 'व्हिस्पर्स फ्राम दि ब्राईटर वर्ल्ड' से उद्धरण देते हुए जिसमें कहा गया है कि कुछ सहज मार्ग के अभ्यासी हैं जो इस जीवनकाल में ही अन्तिम लक्ष्य (परम ध्येय) तक पहुँच चुके हैं, हरेक को प्रेरित किया। इससे यह आशा बँधी कि हममें से हरेक के पास प्रेम और समर्पण, इन दो प्रमुख आध्यात्मिक गुणों का विकास करते हुए अंतिम लक्ष्य (परम ध्येय) तक पहुँचने के लिए एक संयोग, एक अवसर और एक मार्गदर्शक मौजूद है।

गुरुदेव प्रशिक्षकों को तैयार करने में बहुत व्यस्त रहे हैं। इस संगोष्ठी के साथ-साथ शिक्षावृत्ति प्रशिक्षण कार्यक्रम भी चल रहा था जिसके परिणाम स्वरूप लगभग ३६ प्रशिक्षक बनकर तैयार हुए जिन्हें गुरुदेव को दो हफ़्तों से भी कम समय में बनाना पड़ा। वे प्रतिदिन ३ प्रशिक्षक सिटिंग्स देते चले आ रहे हैं और इसका उनकी सेहत पर भारी असर हुआ है।

शुक्रवार १५ फरवरी २०१३, बसन्त पंचमी

सुबह गुरुदेव काफ़ी कमज़ोर और थके हुए दिखाई दिए किन्तु समय से पहले ही तैयार हो गए। वे आश्रम गए और उन्होंने सुबह का सत्संग कराया जिसके बाद भारी वर्षा आरम्भ हुई। गुरुदेव ने हरेक को शुभ दिन की याद दिलाते हुए और लालाजी महाराज द्वारा धरती पर अवतरण के उद्देश्य की याद कराते हुए एक वार्ता दी। उन्होंने कहा कि जब सत्संग शुरु हुआ तब हमें पता नहीं था की वर्षा होने वाली है किन्तु वर्षा हुई। वर्षा का स्वागत है क्योंकि यह ऐसे अवसर पर शुभ होती है।

बाद में गुरुदेव ने 'गार्डन आफ़ हार्टस' में स्थित भाई बलबीर के फ्लैट में अपने कक्ष का जिसका नवीनीकरण किया गया था, उद्घाटन किया और वहाँ रविवार तक रुकने का निश्चय किया। गुरुदेव सिटिंग्स में व्यस्त रहे। उनका गला ख़राब चल रहा था और वे शरीर से कमज़ोर थे किन्तु उनका काम नहीं रुका। रविवार को गुरुदेव ने सत्संग कराया जो एक घंटा और २० मिनट तक चला। तत्पश्चात वे तलघर के सभागृह में गए और उन्होंने दक्षिण अमरीका से आए अभ्यासियों तथा शिक्षावृत्ति प्रशिक्षण कार्यक्रम के सहभागियों के साथ नाश्ता किया। बाद में गुरुदेव वापस भाई बलबीर के घर गए। यद्यपि वे थके हुए थे, फ़िर भी उन्होंने अपना काम पूरा किया। एक अभ्यासी ने गुरुदेव से पूछा कि अपने आप को इस प्रकार क्यों थका रहे हैं। गुरुदेव ने कहा, "जब मैं स्वस्थ नहीं था तब ठीक था किन्तु अब

जबकि मैं स्वस्थ हूँ, मुझे अपना काम करना चाहिए और मेरे कर्तव्यों में से एक कर्तव्य प्रशिक्षक-सिटिंग्स देना है।"

गुरुदेव का काम चलता रहता है। वह कभी समाप्त नहीं होता। हम प्रार्थना करते हैं कि उनका स्वास्थ्य अच्छा बना रहे और वे सबल रहें तथा उत्साही रहें जैसा कि हमेशा रहते हैं।

नए प्रकाशन

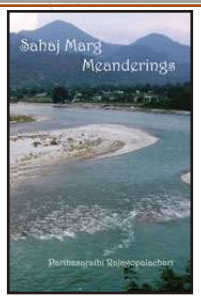

सहजमार्ग मिएन्डरिंग्स
अंग्रेज़ी

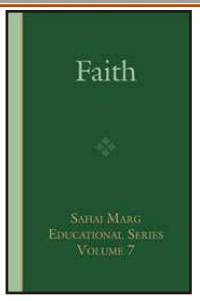

फ़ेत
अंग्रेज़ी

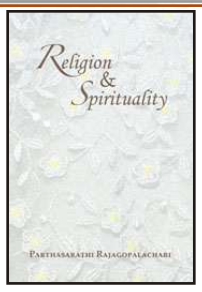

रिलीजन एंड स्पिरिचुअलिटी
अंग्रेज़ी

दिल की आवाज़ २००६
हिन्दी

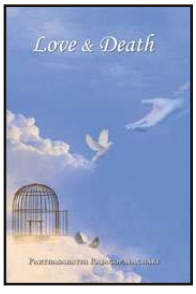

लव एंड डेथ
अंग्रेज़ी

डाउन मेमोरी लेन ,खण्ड १
तमिल

द स्पाइडर्स वेब, खण्ड १
अंग्रेज़ी

सार्वभौमिक सन्देश, खण्ड-२
हिन्दी

रिएलिटी एट डॉन - आडियो बुक
अंग्रेज़ी

पूज्य लालाजी महाराज का १४० वा जन्मोत्सव

> सुख कहीं बाहर नहीं है। यह तो अपने ध्यान को –अपने स्वभाव के संतुलन में और मन को अपने अंदर समेटने में - केन्द्रित करने में है। जो इस रहस्य को जानते हैं, उन्हें सुख को बाहर ढूंढने की आवश्यकता नहीं पड़ती।
>
> – पूज्य लालाजी महाराज

उत्तर भारत

पूज्य लालाजी महाराज का जन्म दिवस, गुडगाँव के विभिन्न केन्द्रों व उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद, बलिया, कानपुर लालगंज, लखनऊ, गोला, गोकरनाथ इत्यादि केन्द्रों पर बड़ी श्रध्दा व उत्साह के साथ मनाया गया। यह उत्सव ज़ोन १० के भवानी, चन्डीगढ़, सोनीपत, पटियाला केन्द्रों में भी आयोजित किया गया। पूरे तीन दिन तक चले इस उत्सव में काफ़ी सँख्या में अभ्यासियों ने भाग लिया।

पूर्वी भारत

कोलकाता, सिलिगुड़ि व खड़गपुर के केन्द्रों ने यह उत्सव आयोजित कर आस–पास के विभिन्न केन्द्रों के अभ्यासियों को भाग लेने का मौका दिया। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत अनेक चर्चाओं, आत्म–निरीक्षण के लिए समय के अलावा अन्य साँस्कृतिक गतिविधियां आयोजित कि गई। सहज–मार्ग के बारे में और ज्यादा गहराई से सोचने का यह एक उचित अवसर था।

दक्षिण भारत

आंध्र प्रदेश के कुरनूल व विजयवाड़ा केन्द्रों पर तीन दिवसीय समारोह का आयोजन हुआ। इस दौरान उपस्थित–जनों की आध्यात्मिक उन्नति के लिए सामूहिक चर्चाएं, प्रस्तुतियां, पहेलियां और विडियो चलचित्र अयोजित किए गए। कर्नाटक के बैंगलूर, कोलार, मैंगलौर, चन्नपटना, गुलबर्गा, हुबली, बिदर और रायचूर केन्द्रों पर उत्सव का आयोजन हुआ, जिसमें आस–पास के केन्द्रों के बहुत से अभ्यासियों ने भाग लिया। इस दौरान सामूहिक चर्चाओं व भाषण के अलावा निबंध लेखन प्रतियोगिता के प्रमाणपत्र वितरित किए गए। केरल के त्रिवेन्द्रम, अलुवा और पयानूर केन्द्रों में समारोह आयोजित हुए। तमिलनाडु के मदुरई केन्द्र में सम्पन्न हुए उत्सव में लगभग २०० अभ्यासियों ने भाग लिया।

पश्चिम भारत

देश के पश्चिम भाग में, गुजरात के अहमदाबाद, महाराष्ट्र के नागपुर, सोलापुर, मुम्बई और राजस्थान के अलवर व जोधपुर केन्द्रों पर उत्सव आयोजित किए गए।

अलुवा

बीकानेर

मैंगलौर

गुलबगा

हुबली

भीलवारा

अहमदाबाद

चन्नपट्ना

मुम्बई

मिर्ज़ापुर

कानपुर

नागपुर

विजयवाड़ा

इलाहाबाद

फूलगाँव

कुरनूल

वाराणसी

लखनऊ

कोलकाता

बैंगलूर

संगोष्ठी

ज़ोनल बैठक–कोलकाता

५ और ६ जनवरी को पश्चिम बंगाल के विभिन्न केन्द्रों के करीब ७० अभ्यासी कोलकाता आश्रम में एकत्रित हुए। इस प्रकार की सभाओं में आनेवाले अभ्यासियों को आश्रम के आध्यात्मिकता से परिपूर्ण वातावरण का लाभ उठाने का अवसर मिलता है। इस जोन में अभी तक केवल कोलकता तथा सिलीगुडी में आश्रम हैं। गैंगटोक केन्द्र में आश्रम पूर्ण रूप से तैयार होने वाला है।

सत्संग के पश्चात भाई महेश भारद्वाज और भाई जेसल मेहता ने सहज मार्ग के मूल–तत्वों पर प्रस्तुतिकरण दिए। इसके पश्चात भाई शरद झवर तथा बहन लीना दवे ने 'ध्यान' और 'सफ़ाई' पर सत्र आयोजित किया। भोजन के पश्चात दुर्गापुर के भाई परिमल जना ने 'प्रार्थना' पर सत्र आयोजित किया। साथ ही खड़गपुर की बहन चन्द्रकांता अरोड़ा ने 'डायरी लेखन' पर एक रोचक सत्र आयोजित किया।

कोलकाता केन्द्र के सौ से अधिक अभ्यासी भी रात को आश्रम में रूके। अगले दिन सुबह के सत्संग के पश्चात ज़ोनल–प्रभारी भाई अजय भट्टर ने लक्ष्य के प्रति गंभीर होने तथा उसकी ओर काम करने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया। अभ्यासियों ने इस दो दिन के आयोजन के अपने अनुभव बाँटे। सभी अभ्यासी अपने साथ प्रिय यादें तथा गुरूदेव के प्रति प्रेम से भरे हृदय लेकर गए।

प्रकाशन कार्यशाला, हुबली

१९ तथा २० जनवरी को बैंगलूर के भाई वेंकट राव और उनकी टीम ने हुबली, सिरसी, गडग, नवनगर, करूर, राणेबेन्नूर, धारवाड़, दावनगेरे और बेलगाम से आए लगभग ४५ प्रतिभागियों के लिए एक कार्यक्रम आयोजित किया। १९ तारीख को भाई वेकंट ने 'सेवा' के विषय में बोला। इस विषय में स्पष्टीकरण के लिए गुरुदेव द्वारा दी गई वार्ताओं के वीडियो दिखाए गए। प्रतिभागियों को दलों में बाँटा गया तथा उनसे विभिन्न प्रसंगों पर आधारित नाटिका प्रस्तुत करने को कहा गया। बिक्री करने के तरीके की बारीकियाँ समझाई गई।

दूसरे दिन का विषय था – सहज मार्ग साहित्य पढ़ने का महत्व। स्वयंसेवकों को सुबह ६ बजे बिक्री के लिए पुस्तकें सजाने के लिए कहा गया। यह कार्य करते समय स्वयंसेवकों के चेहरों पर एक विशेष उत्साह दिखाई दिया जो किताबों की बिक्री के समय भी ज़ारी रहा। किताबों की बिक्री से लगभग ४८०००/– रूपए आए जो काफ़ी आश्चर्यजनक था। शाम को ६ बजे के सत्संग तथा प्रत्युत्तर सत्र के साथ कार्यशाला समाप्त हुई।

अभेदोनपुरा, उत्तर प्रदेश

१७ फ़रवरी को एक पाठशाला में लगभग १५० प्रतिभागियों के लिए एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें पाठशाला के प्रबंधक, प्रधानाध्यापक, शिक्षकों, विधार्थियों तथा स्थानीय अभ्यासियों ने भाग लिया। भाई सुभाष चन्द्र ने कार्यक्रम का संयोजन किया।

भाई आर. एस. इंदोलिया ने सहज मार्ग के विषय में बताया तथा मानव विकास में ध्यान की भूमिका पर प्रकाश डाला। भाई जी. एस. गिल ने आधुनिक जीवन में सहज मार्ग के विषय में बोला। एक प्रश्न के उत्तर में उन्होनें समझाया कि हम ध्यान द्वारा एकाग्रता प्राप्त कर सकते हैं किन्तु ध्यान का ध्येय केवल एकाग्रता नहीं है।

बहन ऊषा गिल ने धर्म तथा आध्यात्मिकता के विषय में बोला जिसके पश्चात एक प्रश्न–उत्तर का सत्र हुआ। प्रतिभागियों ने सहज–मार्ग दर्शन पर आधारित पुस्तकें खरीदीं तथा अन्त में भोजन का आनन्द उठाया।

निबंध लेखन प्रमाण–पत्र वितरण समारोह

अखिल भारतीय निबंध लेखन कार्यक्रम २०१२ के विजेताओं को प्रमाण–पत्र वितरण का समारोह भारत के कई केंद्रों में आयोजित किया गया।

चंडीगढ़

३ फरवरी को तिरुप्पुर के चेट्टिपलायम आश्रम में इनाम वितरण भाई एन प्रकाश, ज़ोनल प्रभारी – भाई टी.वी. विश्वनाथ राव और तिरुपुर के केन्द्र प्रभारी– भाई एस रवि सुब्बियन द्वारा किया गया।

गोबीचेट्टिपलायम

३ फरवरी को गुलबर्गा और १० फरवरी को हुबली में भी इसका आयोजन किया गया था। धारवाड ज़िले के डीडीपीआई भाई श्री वर्धन हुबली समारोह के मुख्य अतिथि थे। बेल्लारी में ए एस एम कालेज के मुख्य अध्यक्ष डॉ तेजस मूर्ति मुख्य अतिथि थे। बीदर और रायचूर में समारोह ३ फरवरी को किया गया। बैंगलूर केंद्र ने कर्नाटक के दक्षिण विभाग के लिए १० फरवरी को समारोह का आयोजन किया, जिसमें बहन सीता कुंचितपादम ने प्रमाण–पत्रों का वितरण किया।

मुम्बई

तिरुप्पुर
गुलबर्गा
टुटिकोरिन

तमिलनाडु के उत्तरी विभाग ने त्रिचि में समारोह का आयोजन किया और डॉ. के रामाकृष्णा; अथमा अस्पताल और अनुसंधान के डायरेक्टर एवं चैयरमैन; मुख्य अतिथि थे। मुरादाबाद में समारोह १७ फरवरी को मनाया गया।

बी एम ए पनवेल में मुम्बई और नासिक केद्रों के लिए समारोह १० फरवरी को रखा गया। समारोह को डॉ. कविता गुप्ता, आई ए एस ऍडिशनल डायरेक्टर जनरल विदेशी व्यापार– भारत सरकार, ने संचालित किया। बहन अनुराधा और भाई संजय भाटिया भी सम्मानित अतिथि थे।

त्रिचि
सिलिगुड़ि

बी एम ए कोलकाता में, जस्टिस चित्ततोश मुखर्जी – निवृत्त चीफ़ जस्टिस मुम्बई और कोलकता उच्च न्यायालय ने विजेताओं को पुरस्कार बाँटे। भाई अजय भट्टर ने कहा कि छात्रों को इस समारोह के दौरान बताए गए उपाय और ख़यालों को अपने जीवन में उतारना है, तभी इस कार्यक्रम का सही मायनों में मतलब निकलेगा।

बेल्लारी

सिलिगुड़ि, दार्जिलिंग और गंगटोक से आमंत्रितगण २७ जनवरी को सिलिगुड़ि में इकत्रित हुए।

मुख्य अतिथि प्रोफ. जयरामन सुरेश थे, जो ज़ान ज्योति कॉलेज के मुख्य अध्यापक हैं और युनेस्को में सलाहकार भी है।

कोलकाता

मुरादाबाद

गुड़गाँव

कर्नूल आश्रम की ज़मीन का पंजीकरण

२७ दिसंबर को भाई ए.पी. दुरई, संयुक्त सचिव, ज़मीन के पंजीकरण के लिए कर्नूल पहुँचे। इसमें १० एकड़ आश्रम और ३० एकड़ अभ्यासी कॉलोनी के लिए शामिल है। सत्संग के बाद उन्होंने नए आश्रम कि ओर प्रस्थान किया जो कर्नूल से करीब १३ कि.मी. बस्तिपडू गाँव में है। भाई दुरई ने, "गुरुदेव को कैसे हमेशा खुश रखना है?" विषय पर समूह चर्चा में भाग लिया। प्रस्तुति के बाद उन्होनें हमारे बीच के भेद–भाव और विविधता को मिटाने और मानवता में सच्चे भाईचारे को जगाने की जरूरत के बारे में बात की। उन्होंने सुझाव दिया कि आश्रमों का उच्चतम उपयोग ही गुरुदेव को सच में खुश रखने का तरीका है। खाने के पश्चात प्रश्नोत्तरी में सहज मार्ग पद्धति इस विषय पर स्पष्टीकरण हुए।

शाम के सत्संग के बाद अध्यापकों के लिए खुले सत्र का आयोजन किया गया। ६० अध्यापक मौजूद थे जिसमें से कुछ नन्दयाल और नंदिकोटकूर जैसी दूर जगहों से भी आए थे।

२८ दिसंबर को सत्संग के बाद जमीन के बिक्री पत्र का पंजीकरण किया गया। इसके बाद समूह ने नई जगह के लिए प्रस्थान किया जहाँ पर २०० अभ्यासी उपस्थित थे। कुछ युवक अभ्यासियों से बोलने के लिए कहा गया और इसके उपरांत केन्द्र प्रभारी –भाई रवींद्रनाथ, क्षेत्र प्रभारी–भाई गंगाधर और बाद में कुछ और लोग भी बोले। भाई दुरई ने अभ्यासी कॉलोनी के तीव्र निर्माण तथा आश्रम के बगल में एक समुदाय विकसित करने के बारे में गुरुदेव के निर्देशों को बताया। सत्र सत्संग के साथ समाप्त हुआ।

सोलापुर आश्रम, महाराष्ट्र

३० दिसंबर २०१२ को लाइव वीडियो द्वारा, गुरुदेव ने सोलापुर आश्रम के ध्यान कक्ष का उद्घाटन किया। सोलापुर आश्रम १.५ एकड़ ज़मीन पर बना है जो अक्कलकोट के रास्ते पर शहर से ५ ही कि.मी. कि दूरी पर है। ध्यान कक्ष, जो करीब ३५०० वर्ग फ़ुट है, ८५० अभ्यासियों के लिए पर्याप्त है। करीब ५०० अलग–अलग प्रकार के पेड़, जिसमे नीम और पीपल भी शामिल हैं, वातावरण को एकदम हरा–भरा रूप देते हैं जिसे देख गुरुदेव अति प्रसन्न हुए। गुरुदेव ने, वीडियो के दौरान पूरे आश्रम के कार्यस्थल की बारिकियों के बारे में पूछताछ की। उन्होंने याद दिलाया कि २३ साल पहले उनके सोलापुर के दौरे के समय, वे दूरभाषी टावर तक चलकर गए और वहाँ के कार्यालय से अपने परिवार से चेन्नई में बात की। आश्रम का स्थल वहाँ से ठीक आधे कि.मी. की दूरी पर स्थित है। वीडियो देखने के बाद गुरुदेव ने आश्रम को पूज्य बाबूजी महाराज को समर्पित किया। मौजूद सोलापुर केंद्र के कुछ ही अभ्यासियों को इस शुभ अवसर पर गुरुदेव ने प्रसाद बाँटा।

मुरादाबाद

भाई राज किशोर ने २७ जनवरी को ४८ अभ्यासियों के लिए मुरादाबाद के आश्रम में प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। छोटे वर्गों में चार सत्र संचलित किए गए। पहले सत्र में अंतरावलोकन और अंदरूनी जागरुकता के बारे में स्पष्ट किया गया। दूसरा सत्र ध्यान के सारे पहलुओं के बारे में था और वीडियो द्वारा स्पष्टीकरण दिया गया। व्हिस्पर्स फ्रॉम दी ब्राईटर वर्ल्ड के संदेशों से इस विषय पर कुछ गिनी–चुनि टिप्पणियां भी इसमें शामिल की गई थी।

तीसरा सत्र समूह कार्य पर था। अभ्यासियों को जोडियों में बाटाँ गया और हर वर्ग को कार्य सोंपा गया ताकि उन्हें समूह कार्य के क्रियात्मक परिपालन का अनुभव हो। छोटे से चाय ब्रेक के बाद आखरी सत्र में एक वीडियो प्रस्तुति थी जिसके बाद उसी पर थोड़ा चिंतन भी हुआ। कार्यक्रम के अंत में हर अभ्यासी ने अपना अनुभव व्यक्त किया और कार्यक्रम के बारे मे अपनी राय बताई।

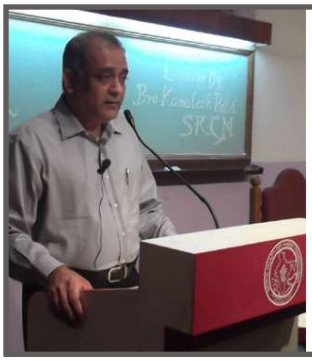

त्रिचि

भारथीदासन विश्वविद्यालय, सुरियूर, त्रिची में ४ जनवरी को एक खुला सत्र आयोजित किया गया। विभिन्न संकायों के करीब साठ स्नातकोत्तरों, शोध छात्रों, तकनीकी अधिकारियों और शिक्षकों ने भाग लिया।

सुश्री अन्ना जॉइसी ने सभा का स्वागत किया और भाई कमलेश पटेल– एस. आर. सी. एम. के उपाध्यक्ष का परिचय दिया जिन्होंने ध्यान का महत्व और उसके पीछे के विज्ञान को समझाते हुए सभा को सम्बोधित किया। भाई कमलेश ने सत्र के बाद कुछ प्रतिभागियों से बातचीत की। कईयों ने इस प्रणाली से जुड़ने की अपनी इच्छा व्यक्त की।

१२ फरवरी को भारथीदासन विश्वविद्यालय, त्रिची के पौधा विज्ञान विभाग के सभागृह में एक खुला सत्र आयोजित किया गया। इसमें करीब पचास विद्यार्थी, शोध छात्र और मरीन बायोटेक्नॉलॉजी और मरीन संकाय (समुद्री विज्ञान) के सदस्य उपस्थित थे। त्रिची के केन्द्र प्रभारी भाई टी.एस रघुराम ने सभा को संबोधित किया। छात्रों नें उनसे स्पष्टीकरण चाहते हुए वार्तालाप किया और कुछ ने प्रणाली का अनुभव करने की इच्छा भी प्रकट की।

गोला गोकर्णनाथ, उत्तर प्रदेश

२० जनवरी को गोलागोकर्णनाथ केन्द्र, यू.पी. में केन्द्र प्रभारी– भाई प्रभात के समन्वय से विभिन्न स्कूलों और कॉलेजों के ११० शिक्षकों के लिए एक कार्यशाला आयोजित की गयी। बहन सुजाता 'आत्मबोध की प्रक्रिया और सिद्धान्त' और भाई पंकज 'आधुनिक समाज में शिक्षकों की भूमिका' पर बोले। दोपहर के खाने के बाद, भाई हेमराज ने "आज के युवाओं की समस्याएं और उनका समाधान" विषय की व्याख्या की। शिक्षकों ने भी अपने अनुभव श्रोताओं के साथ बांटे। कार्यशाला अत्यन्त सुव्यवस्थित थी और इसकी सफ़लता में करीब चालीस स्वयंसेवको का योगदान था।

केरल का दौरा

संयुक्त सचिव भाई ए.पी.दुरई ने मुख्यतः शिक्षण संस्थानों में खुले सत्र और सेमिनार आयोजित करने के लिए केरल क्षेत्र का दौरा किया। त्रिवेन्द्रम पहुंचने पर उन्होंने १७ और १८ फरवरी को सैनिक स्कूल और त्रिवेंद्रम के विश्वविद्यालयों एवं कॉलेजों से शुरुआत की। १९ ता. को उन्होंने दो समूहों को एटिंगल में और एक को कोल्लम में सम्बोधित किया। दिनाक २० को उन्होंने पाथनामथिट्टा और चेंगानूर ज़िलों में सत्र आयोजित किए। दि.२१ को, तीन सत्र कोट्टायम के के.एस.ई.बी, महात्मा गांधी यूनिवर्सिटी और कुमारनेल्लूर हायर सेकंडरी स्कूल में और शाम को श्री रामकृष्ण सेवाश्रम, कोच्ची में आयोजित हुए। दि.२२ को उन्होंने अलुवा आश्रम में अभ्यासियों से बातचीत की और बाद में एन एस एस हायर सेकंडरी स्कूल (पाराक्कडावू), श्री नारायन गुरु इंसटिट्यूट ऑफ़ साईंस और टेक्नॉलॉजी (कुरुमालूर) और विद्याधिराजा विद्याभवन एच एस (अलुवा) में सत्र आयोजित किए।

२३ ता. को सुबह का सत्र लोबेलिया हायर सेकंडरी स्कूल (नयारांबालम) में था। उन्होंने त्रिसूर आश्रम में भी शाम को अभ्यासियों से और २४ ता. की सुबह युवाओं से बातचीत की। अंबालूर में एक वार्ता सत्र के बाद वे शाम के सत्र के लिए पलक्कड रवाना हो गए। २५ ता. को उन्होंने मालापुरम, कोज़िकोडे और वडाकारा केन्द्रों पर खुले सत्रों का आयोजन किया। अंतिम खुला सत्र पाय्यानूर में दि.२७ को आयोजित हुआ।

इन सत्रों मे भाई दुरई गृहस्थाश्रम में रहते हुए भी आध्यात्मिकता का अभ्यास, मूल्य आधारित जीवन, आधुनिक व्यक्ति को संस्कार मुक्त होने में सहज मार्ग कैसे मददगार है, धर्म और आध्यात्मिकता में अन्तर और ईश्वर की अवधारणा आदि विषयों पर बोले और एक नई मूल्य आधारित पीढ़ी के निर्माण में शिक्षक की ज़िम्मेदारी पर ज़ोर दिया। वहां अभ्यासियों के साथ भी सत्र हुआ जिससे उन्हें अपनी शंकाओं के समाधान में मदद मिली और एक केन्द्र जैसा महसूस हुआ। उन्होंने २८ ता. की शाम को पाय्यानूर से चेन्नई की ओर प्रस्थान किया।

गुजरात–ज़ोनल मीटिंग (क्षेत्रीय सभा) (ज़ोन– ६अ एवं ६ब)

प्रशिक्षकों व कार्यकर्ताओं से मिलने के लिए २४ जनवरी को भाई सी. राजगोपालन अहमदाबाद आए। अहमदाबाद एवं गांधीनगर केन्द्र के प्रशिक्षकों के साथ मीटिंग में उन्होंने प्रशिक्षकों को सैटेलाइट केन्द्रों (उपकेन्द्रों) में जाने एवं मिशन के कार्य के लिए अभ्यासियों को तैयार करने के लिए प्रोत्साहित किया।

२५ जनवरी को भाई राजगोपालन ज़ोन ६अ के मेहसाना, पालनपुर, हिम्मरनगर, जामनगर, भुज एवं राजकोट केन्द्रों के प्रशिक्षकों से मिले। इसके बाद वह सैटेलाइट केन्द्रों के संयोंजकों से मिले। अगले दिन जोन ६अ व ६ब के प्रशिक्षकों के लिए सभा आयोजित की गई जिसमें 'साधना एवं प्रशिक्षकों की भूमिका' पर प्रश्नोत्तर का एक सत्र रखा गया।

२७ तारीख को भाई राजगोपालन "साधना के मूल तत्व और एस.आर.सी.एम. से परिचय" विषय पर बोले। वह नवसारी, बड़ौदा, भरुच, अंकलेश्वर और सेलम्बा के प्रशिक्षकों से मिले।

सभी ने इन तीन दिनों में मालिक की उपस्थिति महसूस की। प्रत्येक ने भाई राजगोपालन को धन्यवाद दिया और मिशन के विकास हेतु कार्य के प्रति स्वयं को समर्पित किया।

सतखोल आश्रम, उत्तराखंड

३० व ३१ दिसम्बर २०१२ को उत्तराखंड से आए ४४ प्रशिक्षकों ने बहन छवि, पूनम बब्बर एवं विमला शेरोन और भाई जिगनेश द्वारा हिंदी में आयोजित दो दिवसीय 'प्रशिक्षक विकास कार्यक्रम' में भाग लिया।

पूरे कार्यक्रम में मालिक की सशक्त अनुभूति के बीच सबके हृदय खुले, भाईचारा बढ़ा एवं सभी ने गहन अभ्यासी बनने एवं 'उनकी' संतुष्टी के लिए बेहतर कार्य करने का संकल्प लिया। प्रत्येक सत्र के बाद परिपूर्णता का हुनर सीखने के लिए कुछ कार्य, कुछ प्रयोग किए गए एवं तरोताजा, नएपन के साथ गहन चिंतन द्वारा गम्भीर, उद्देश्यपूर्ण, जागरुक प्रशिक्षक कार्य हेतु गहन अर्थ को मौन में आत्मसात करने के लिए व्हिस्पर्स से बाबूजी के अनेक संदेश व मालिक की वार्ताएं चलाई गयीं।

प्रशिक्षक सेमिनार, त्रिचि

२१ से २५ जनवरी तक त्रिचि आश्रम में भाई सन्तोष श्रीनिवासन द्वारा एक प्रशिक्षक सेमिनार आयोजित कीया गया। भारत से ६३ एवं कुछ विदेशी प्रशिक्षकों ने इस आवासीय सेमिनार में हिस्सा लिया। मालिक इस कार्यक्रम के प्रत्येक पहलू में शामिल थे। प्रशिक्षक के स्वयं के व उसकी देखरेख में अभ्यासियों के लिए मज़बूत नींव का निर्माण तथा अभ्यासियों की साधना एवं प्रशिक्षक हेतु आवश्यक नज़रिए पर प्रकाश डालना इस सेमिनार का मुख्य केन्द्रबिन्दु था।

मालिक २२ जनवरी को आए और सेमिनार अपने कार्यक्रमानुसार वार्ता, अन्तरावलोकन, समूहचर्चा, वार्तालाप, गतिविधि इत्यादि जोशपूर्ण कार्य एवं अन्तरावलोकन के लिए समय, साधना एवं सत्संग के साथ चलती रहा। मालिक ने २३ तारीख को सत्संग कराया और प्रतिभागियों को 'प्रशिक्षक कैसे हों' पर एक वार्ता दी। प्रत्येक दिन सत्संग से शुरु हुआ एवं २४ तारीख का केन्द्र बिन्दु था कि 'सिटिंग देते समय मालिक से कैसे जुड़ें'।

२५ तारीख को भाई कमलेश पटेल ने सत्संग कराया एवं प्रशिक्षक कार्य के विभिन्न बिंदुओं पर चर्चा की। भाई कृष्णा ने उसी शाम 'हमने सहज मार्ग को कितना अच्छे से समझा' पर वार्ता दी जिसके बाद प्रश्नोत्तर सत्र हुआ। सेमिनार २६ तारीख को मालिक द्वारा सत्संग एवं वार्ता के साथ संपन्न हुआ। प्रत्येक शाम प्रतिभागियों ने मालिक के साथ समय व्यतीत किया एवं जानकी फार्म पर डिनर किया। सेमिनार ने व्यक्तिगत अनुभवों को गहरा किया और सभी ने लिए गए कार्य को उनको दिए गए किरणबिन्दु और निर्देशों के साथ करने के लिए नवीन ऊर्जा के साथ प्रस्थान किया।

युवा गतिविधियाँ

नचिपलायम आश्रम, कोयम्बटूर

कोयम्बटूर, पोलाची एवम पलानी के तीस युवकों ने नचिपलायम आश्रम कोयम्बटूर में २९ एवं ३० दिसम्बर को आयोजित कार्यक्रम में भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारम्भ सत्संग के साथ हुआ, तत्पश्चात एक दूसरे को जानने का अवसर प्रदान करने वाला महत्वपूर्ण सत्र हुआ। लक्ष्य, वैश्विक दृष्टिकोण, साधना, एकता एवं भाईचारे के प्रति नजरियों पर आत्मविश्लेषण एवं परिचर्चा प्रभावी रहे। सामूहिक खेल एवं गीतों ने सभी सहभागियों को एक परिवार के रूप में तथा भाईचारे की भावना को बढ़ावा देने में मदद की। एक सत्र "सेवा–आध्यात्मिक उन्नति की कुँजी" को ज़ोन प्रभारी– भाई विश्वनाथ राव ने सँचालित किया। क्रैस्ट पर हुए एक सत्र ने युवाओं को वहाँ होने वाले कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। दूसरे दिन के कार्यक्रम में बाबूजी के ब्राइटर वर्ल्ड से प्राप्त संदेश, मालिक की वार्ताएं एवं युवाओं के लिए अन्य प्रेरक वीडियो शामिल थे।

युवक सेमिनार, पनवेल आश्रम, मुम्बई

२६ एवम २७ जनवरी को महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश एवं गुजरात के १०० से अधिक सहभागी पनवेल आश्रम मुम्बई में एकत्रित हुए। सेमिनार का विषय था – "गुरुदेव के दिव्य स्वप्न के लिए एक साथ कार्य करना"। युवाओं ने एक साथ कार्य करना तथा मालिक की वार्ता "दिव्य दृष्टा बनना" से प्रेरित होकर मिल जुलकर कार्य करने की आवश्यकता महसूस की।

NASA खेल ने जिवित रहने के लिए मिलकर कार्य करने के महत्व को अधोरेखित किया। जिन युवाओं ने क्रैस्ट कार्यक्रम में भाग लिया था तथा रिट्रीट केन्द्रों में उपस्थित रहे, उन्होंने अपने अनुभव बाँटें जिससे ऐसे कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए दूसरों को प्रेरणा मिले।

बैंगलोर

क्रैस्ट बैंगलोर ने ८२ युवाओं की १८ से २० जनवरी तक मेजबानी की, इनमें से कई युवा क्रैस्ट में पहली बार आए थे। क्रैस्ट कार्यक्रम में भाग लेने वाले युवा प्रातः ४:१५ से रात्रि १० बजे तक व्यस्त रहे।

भाई गोपालन ने "स्वयं को बदलने के लिए स्वमाध्यम से स्वयं पर कार्य करना" विषय पर, भाई भद्रेश ने "अनंत क्षमता के बीज" विषय पर तथा भाई डॉ कृष्ण मूर्ति ने "१०० भेड़ों से एक शेर बेहतर है" विषय पर व्याख्यान दिए। इनसे भाग लेने वाले युवाओं को प्रेरणा मिली तथा विचार हेतु पर्याप्त सामग्री प्राप्त हुई।

कच्ची मिट्टी की मूर्तियां बनाने तथा फोटोग्राफी जैसी गतिविधियों से उन्हें अपने विचारों को व्यक्त करने तथा अपने आसपास के वातावरण को नए दृष्टिकोण के साथ देखने का अवसर मिला। सामूहिक एवं रचनात्मक कार्य दर्शनीय थे।

वाचन पठन के निर्धारित समय में प्रत्येक समूह को एक पुस्तक दी गयी, जिसे गुरुदेव ने विभिन्न अवसरों पर उद्धरित किया है। प्रत्येक समूह को इसे समझ कर, विचारकर , इस पर एक प्रस्तुतीकरण अगले दोपहर को देना था।

सभी दस समूहों ने अपनी अपनी पुस्तकों के सार को विभिन्न रूपों में प्रस्तुत किया। उनका सामूहिक कार्य एवं उनका उत्साह दर्शनीय था। सभी सहभागी उन्हें प्राप्त इस अवसर के लिए कृतज्ञ थे तथा इस अवसर के भरपूर उपयोग के लिए आशान्वित थे।

अडलज योगाश्रम, अहमदाबाद

६ जनवरी २०१३ को विभिन्न संस्थानों के ४० साल से कम उम्र के युवाओं के लिए,'ध्यान के द्वारा जीवन में संतुलित अस्तित्व' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। भाई जिगनेश शेलट द्वारा करीब दो घण्टे का एक कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें सामूहिक चर्चा और सहजमार्ग प्रणाली का परिचय दिया गया। परिणाम उम्दा था और

आयोजकों को इसी प्रकार से हर तीन महीने में ओपन हाउस (खुले सत्र) करने के लिए प्रोत्साहित करने वाला था।

युवा कार्यक्रम, अहमदनगर

३० दिसंबर २०१२ को अहमदनगर केन्द्र पर 'सतत स्मरण' विषय पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। एक भजन और कविता के द्वारा मालिक के प्रति प्यार व्यक्त किया गया। भाई तपस कुलकर्णी ने केन्द्र की २०१२ की गतिविधियों का एक ब्यौरा दिया। इसके

उपरान्त एक प्रश्नोत्तरी का आयोजन हुआ जो 'ऋतवाणी' पुस्तक पर आधारित थी तथा इसमे बाबूजी महाराज की शिक्षाओं को समझने तथा अभ्यासियों को मिशन का साहित्य पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए कहा गया। भाई, बहनों तथा बच्चों के तीन समूहों का एक आपसी चर्चा का सत्र, जिसमें 'एक दूसरे को जानने में मदद मिले और भाईचारा विकसित हो' आयोजित किया गया। कार्यक्रम का समापन एक नाटक जिसका विषय 'सतत् स्मरण' के साथ हुआ और इसके उपरान्त आगामी नववर्ष के आगमन का जश्न केक काट कर मनाया गया।

वड़ोदरा

वड़ोदरा के युवाओं ने आश्रम के परिसर में विभिन्न प्रकार के पौधे लगाकर गणतंत्र दिवस मनाया। वास्तव में प्रकृति हमारी सच्ची मित्र है यदि हम इसका प्यार से पोषण तथा सम्मान करना सीख लें।

प्रशिक्षक संगोष्ठी, शाहजहाँपुर

दिसंबर के आखिरी सप्ताह में शाहजहाँपुर आश्रम में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें ३८ प्रशिक्षक उपस्थित हुए। इसकी उद्घोषणा 'ग्राउंडिंग इन दी प्रैक्टिस' कार्यक्रम के साथ की गई। अगले दिन प्रतिभागियों को पाँच समूहों में विभाजित किया गया और अर्थात् चर्चा के लिए विभिन्न विषयों को सौंपा गया। जो इस प्रकार हैं...

- एक रोल मॉडल के रूप में कैसे सेवा करें?
- केन्द्र के विभिन्न क्षेत्रों के प्रति गहन व्यक्तिगत सराहना कैसे विकसित करें?
- मालिक के साथ गहरे सम्बंध स्थापित करने कि लिए अभ्यासी को कैसे प्रेरित और प्रोत्साहित करें।
- कैसे स्वयंसेवकों का एक सक्रिय एवं पर्याप्त समूह बनाएं और उनके बीच सद्भाव और भाईचारे को प्रोत्साहित करें?
- केन्द्र के आध्यात्मिक विकास के लिए एक परिप्रेक्ष्य योजना विकसित करना।

विचार विमर्श, अनुभवों और विचारों को सांझा करने के बाद सभी प्रतिभागियों ने उनके संबंधित केन्द्रों की कमियों को स्वीकार किया और उनको बेहतर करने के लिए बदलने का फैसला किया। प्रतिभागियों की आन्तरिक खुशी उनके चेहरों पर इस बात का सबूत थी कि पूरी संगोष्ठी आँख खोलने वाली, बहुत अच्छी तरह से आयोजित की गई और सबके द्वारा स्वीकार की गई।

नई नियुक्तियाँ

केन्द्र प्रभारी

पटियाला, पंजाब – भाई अनिल वशिष्ट
नवसारी, गुजरात – भाई नितिन नारंदास हरियाणी
राजकोट,गुजरात – भाई सतीश बलवंतराय मेहता
वापी,गुजरात – भाई प्रकाश दयाराम पटेल
त्रिप्रयार,केरल – भाई एस. जयकुमार
वाराणसी, उत्तर प्रदेश – बहन माया सिंह
विशाखापटनम, आंध्र प्रदेश – भाई कोलाचिना सप्तमुखुलु
लखनऊ, उत्तर प्रदेश – बहन प्रियदर्शनी सक्सेना

ज़ोन प्रभारी

उड़ीसा – भाई गंधर्ब बेहरा
महाराष्ट्र – पश्चिम और गोवा– डा. सुभाष वैद्य
महाराष्ट्र – मध्य – भाई अरुन कुमार चौहान
महाराष्ट्र – विदर्भ – भाई राजेन्द्रन रेथिनम
मध्य प्रदेश (पश्चिम) – भाई प्रभाकर दास
मध्य प्रदेश (पूर्व) – मेजर जनरल ए.एन. मुद्रे

लखनऊ, आश्रम प्रबंधक – भाई ओम प्रकाश गुलिया
प्रबंधक, मलमपुरा रिट्रीट सेंटर – भाई के.चन्द्रसेखरन नायर

अलवर आश्रम, राजस्थान

प्रकाश का केंद्र

"आपको अपने व्यवहार को गुरुदेव को आदर्श मानकर उनके जैसा बनाने की कोशिश करनी चाहिए। यदि वे विनम्र हैं तो आपको भी विनम्र बनने की कोशिश करनी चाहिए, और इसकी आदत हो जाने से ये विनम्रता में बदल जाती है। सिर्फ उस इंसान, जिसकी आप प्रशंसा करने और जिसे आप बहुत अधिक प्रेम करने का दावा करते हैं, का अनुसरण करने मात्र से आप अपना चरित्र बदलने में सफल हो जाते हैं।"

– पी राजगोपालाचारी, ४ मई १९९०, प्रशिक्षक गोष्ठी, सरिस्का

अलवर, जिसे राजस्थान का सिन्ह द्वार माना जाता है, खूबसूरत आरावली पहाड़ियों में स्थित है। ये दिल्ली के दक्षिण में १६० कि.मी. दूर है जबकि जयपुर से १५० कि.मी. उत्तर में है। अलवर अपनी आध्यात्मिक विरासत के लिए जाना जाता है। भाई गोकुल गोस्वामी के १९८९ में अलवर तबादले के साथ वहाँ केन्द्र की स्थापना हुई। बाद में भाई जे.पी.दुबे और उन्की पत्नी अभ्यासी बने। अगले कुछ सालों तक भाई दुबे के घर सत्संग चलता रहा। अक्तूबर १९९६ मे भाई दूबे को प्रिशिक्षक नियुक्त किया गया। अभ्यासियों की संख्या बढ़ने की वजह से रविवार का सत्संग विद्यालय में कराया जाने लगा।

अलवर स्थित केन्द्र राजस्थान राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित अम्बेडकर कॉलोनी में है। ये शहर के पूरब में रेल्वे स्टेशन से करीब ०.४ कि.मी. है तथा बस अड्डे से ०.६ कि.मी. दूर है।

पूज्य मालिक सबसे पहले अलवर तब आए जब सरिस्का पैलेस हॉटल में ३ से ५ मई १९९० को अन्तर्राष्ट्रीय प्रशिक्षक संगोष्ठी हुई थी। पूज्य मालिक दूसरी बार १९–२० अक्तूबर १९९९ को आए थे जब राज्य स्तर का आयोजन हुआ था। उनके आने से अलवर केन्द्र का बहुत विकास हुआ और यहाँ पर आज करीब ३०० अभ्यासी हैं।

राज्य सरकार ने अलवर केन्द्र के लिए २०५१ वर्ग मीटर भूमि ९९ साल की लीज पर दी जिसका पन्जीकरण मिशन के सचिव भाई उमा शंकर के द्वारा १ नवम्बर २००७ को कराया गया।

२८ जनवरी २०१० को पूज्य मालिक ने उदघाट्न शिला वाले पत्थर का अनावरण किया तथा सत्संग कराया जिसमें ५०० अभ्यासी शामिल हुए। तब से कई बार यहा पर प्रेम और आस्था के साथ न केवल अलवर केन्द्र के बल्कि आस पास के केन्द्रों जैसे राजगढ़, खैरथल, कोटपुतली, बान्दीकुई, महवा, और पिलवा के अभ्यासियों ने भी भाग लिया।

अभी तक आश्रम की ज़मीन के चारों तरफ़ की दीवार का निर्माण हो चुका है। २६ x ७६ फ़ीट का हॉल पूजा के लिए उपयोग में लाया जाता है। ध्यानकक्ष से लगा हुआ पूज्य मालिक का कार्यालय है, रसोई, कार्यवाहक का कमरा, शौचालय, स्नानघर एवं बोरवेल का कार्य पूर्ण हो चुका है। आश्रम के बाहर हरा एवं फूलों से भरा हुआ लॉन बहुत ही आकर्षक है तथा भविष्य में ५०*७० चौ. फ़ीट के ध्यान कक्ष के निर्माण की योजना है।

To download or subscribe to this newsletter, please visit http://www.sahajmarg.org/newsletter/india For feedback, suggestions and news articles please send email to in.newsletter@srcm.org
© 2013 Shri Ram Chandra Mission ("SRCM"). All rights reserved. "Shri Ram Chandra Mission", "Sahaj Marg", "SRCM", "Constant Remembrance" and the Mission's Emblem are registered Trademarks of Shri Ram Chandra Mission.This Newsletter is intended exclusively for the members of SRCM. The views expressed in the various articles are provided by various volunteers and are not necessarily those of SRCM.